Conclusion

उपसंहार

यह तो सर्वविदित है कि हिन्दी साहित्य में कहानी एक सशक्त विद्या के रूप में उभरकर आयी है । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी कहानी ने अपनी प्राचीन केंचुल उतारकर एक नया रूप धारण किया । जिसमें उसने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सम्बंधो में आये बदलाव को बडी ही सूक्ष्मता के साथ रेखांकित किया । कथावस्तु और शिल्प विधान दोनों में एक तरह से युगान्तकारी परिवर्तन आये । आजादी के बाद कहानी विद्या में जो विभिन्न आन्दोलन हुए वे ही आधुनिक कहानी की विकास यात्रा के परिचायक हैं ।

कहानी के छोटे से फलक पर मानवीय मन:स्थिति की सूक्ष्म छवियों और सामाजिक, आर्थिक संघर्षो से झूझने के तेवरें-मुद्राओं को ईमानदारी तथा बारीकी से अंकित करना बडा चुनौती भरा काम है । परन्तु यादव जी ने इस चुनौती को स्वीकारा ही नहीं बल्कि बडी सफलता से अपनी छोटी-बडी अनेकानेक कहानियों के माध्यम से जैसे-तैसे छोटे-छोटे टुकडों में उन्होंने आम आदमी के अन्त: बाह्य संघर्ष के सम्पूर्ण संश्लिष्ट को उजागर करके रख दिया है ।

सूर्यदीन यादव जी ग्राम्यांचल के निवासी हैं और विगत वर्षो में उन्होंने साहित्य की उपलब्धियों द्वारा हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है । वे ग्राम्यांचल के मध्यमवर्गीय परिवार से उठे हुए एक अत्यंत प्रभावशाली और प्रखर रचनाकार है । यादव जी के अब तक ७ उपन्यास, ५ कहानी संग्रह, ९ संस्मरण प्रकाशित हो चुके हैं । यादव जी की पहली कहानी १९६८ में छपी तब से लेकर अब-तक उन्होंने अनेक विधाओं से सम्बंधित साहित्य का सृजन किया है ।

सूर्यदीन यादव जी हिन्दी के विलक्षण कथाकारों में से एक हैं । एक औघड़ किस्म के व्यक्तित्व वाले यादव जी अपने आप में सबसे अलग और बेजोड़ हैं ।

कथाकार सूर्यदीन यादवजी मूलत: कथाकार थे । यों वे एक कवि, उपन्यासकार और एक अच्छे निबंध लेखक की भूमिका में भी अपने साहित्य के माध्यम से हमारे सामने आते हैं, लेकिन उनका एक विशिष्ट लेखकीय व्यक्तित्व मूलत: कथाकार का ही ठहरता है । उनके कथा साहित्य में उनके कहानी संग्रहो, उपन्यासों की संख्या कम होते हुए भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है । यादवजी के कहानियों एवं उपन्यासों के अवलोकन से एक बात स्पष्ट होती है वह है उनके कर्मठ और संघर्षशील व्यक्तित्व के अनुरूप उनके कथा साहित्य में चित्रित नये और संघर्षशील कथा-पात्रो की उपस्थिति । इन्हीं पात्रों के बलपर यादवजी ने अपनी कुछ अनुठी और दिलचस्प कथा कृतियों का सृजन किया है जिनके सम्यक, विवेचन

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY The M. S. University of Baroda

के उपरांत ही उनके समग्र कथाकार व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जा सकता है । 'अँधेरा जहाँ उजाला' उपन्यास के आवरण पृष्ठ पर प्रकाशक स्वयं लिखते हैं कि 'अँधेरा जहाँ उजाला' दरअसल लेखक का भोगा हुआ यथार्थ दस्तावेज है, जिसमें गाँव परिवेश के जर्रे-जर्रे और पर्त-दर-पर्त की पहचान है । हर जगह दु:ख के साथ एक मीठे सुख का सहलाव है । समस्याएँ, जाल फरेबी, बेईमानी और नफरत की आग के बीच में संघर्षरत गँवई मनई भी किसी के अंधकारमय पथ की रोशनी बन सकता है। यहाँ का सामान्य पात्र निकवा भी सुंदर, स्वस्थ, निरोगी समाज की अपेक्षा रखता है । गाँव और समाज, बल्कि राष्ट्र के मजबूत अखण्डित तेज की जवाबदारी माटी के हर ढ़ेले, प्रत्येक कण की होती है, तभी जमीन में अंकुर फूटते हैं । जमीन सुरक्षित रहती है । उजाले की एक किरण अँधेरे को चीरकर तथा मार्ग प्रशस्त कर सकती है और वही किरण जहाँ को रोशन क़र सकती है । जिसमें हमें उनका संघर्षशील का व्यक्तित्व दिखाई देता है।

सूर्यदीन यादव के कहानी और उपन्यासों में जो बात सबसे अधिक हमारा ध्यान खीचती है वह है उनका असाधारण अनुभव विस्तार । एक लेखक के रूप में यादव जी को जितना जिस ढंग से संघर्ष करना पडा है उसे देखते हुए अपने समकालीनों के बीच बहुत कुछ अपवाद जैसी लगती है । यादव जी के कहानियों की खासियत है कि उसमें ठीक जीवन की तरह तमाम रंग, छबियाँ और मुद्राएँ हैं । और वे बार-बार अलग ढ़ंग से लुभाती हैं । उनकी कहानियाँ हरबार पढ़ने पर नई, कुछ और नई लगती हैं और उनमें नये-नये अर्थ खुलते और जगमगाते नजर आते हैं ।

सूर्यदीन यादवजी की कहानियों और उपन्यासों को विषय वस्तु की दृष्टि से विश्लेषित करते हुए हम उन्हें सामाजिक कहानी, मनोवैज्ञानिक कहानी, राजनैतिक कहानी, प्रेमपरक कहानी, आँचलिक कहानी, और स्त्री-पुरुष संबंध पर आधारित क़हानी के रूप में विभाजित कर सकते हैं ।

जहाँ तक कहानी कला की कसौटी का प्रश्न है इस दृष्टि से भी देखें तो यादवजी के कथानक विविधता भरे जीवन के अनेक पक्षों को समेटे हुए जीवंत और मार्मिक हैं। यादवजी के कथानकों की प्रथम विशेषता यह है कि उनकी अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण मानव जीवन को चित्रित करती हैं । उनका सुझाव ग्रामीण सामान्य जन-जीवन के माध्यम से उनको अधिक स्वतंत्रता देता है । लेखक की विचारधारा भी इसी वर्ग से संबंधित है। अत: इन कहानियों के कथानकों की घटनाएँ सहज व स्वाभाविक बन पडी हैं । ग्रामीण जन-जीवन के यथार्थ पहलुओं का तटस्थ विश्लेषण करने वाले कथानक मार्मिक व सजीव बन पडे हैं । यद्यपि उन्होंने कुछ कहानियाँ स्त्री-पुरुष के संबंधो पर लिखी है जैसे 'पहली

मुलाकात', 'पलभर का सफर', 'परदेशी की एक रात', 'नशा' । इन कहानियों में भी स्वाभाविकता, सजीवता व वास्तविकता है जिसे यादवजी की एक उपलब्धि माना जा सकता है । यादव जी के कथानकों की दूसरी विशेषता यह है कि वे आँचलिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक हैं । दूसरे शब्दों में कहें तो कथानकों में इन दोनों का मिश्रण सम्यक रूप से हुआ है । जैसे 'भैया', 'चरण-स्पर्श', का कथानक सामाजिक है किन्तु प्रस्तुतीकरण करने का ढ़ंग मनोवैज्ञानिक है । यादव जी ने आस-पास के जीवन से ही कथानक का चुनाव किया है । योगानुरूपता व युगजीवन अभिव्यक्ति के गुण आर्थिक रूप से ही समाविष्ट हुए हैं । उनके कथानक किसी विदेशी भूमि से आयात नहीं किये गये अपितु अपनी जमीन से उपजे हैं, अपने ही युग जीवन का श्रोत उनकी प्रेरणा रही है। यादव जी के कथानकों की दूसरी विशेषता यह है कि उनमें नितांत मौलिकता है । उनकी अभिव्यक्ति सहज व सरल है । पाठक कथा के साथ बहता है । उदाहरण के रूप में 'मंदिर-मस्जिद', 'सिंह के बेटे उर्फ इन्टरव्यू' का कथ्य एक-सा है । किन्तु प्रस्तुतीकरण करने का ढ़ंग भिन्न है। उनके कथानकों का आरंभ आकर्षक व नाटकीय है । उदाहरण के रूप में 'चूहे बने साँप', 'अपने आदमी', 'दहशत का हथौडा' आदि कहानी देखी जा सकती है । 'दहशत का हथौडा' कहानी में युगीन आंतकवाद, साम्प्रदायिक बिखराव मानसिक धुन्ध उभरता है । मात्र एक दहशत से जन्म जन्मान्तर की मैत्री तस-नस हो जाती है ।

यादव जी की कहानियों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है की उनकी कहानियों में गतिशील एवं ग्रामीण दलित पात्रों की संख्या अधिक है । उनकी कहानियों के कुछ पात्र नितांत व्यक्ति प्रधान हैं, और कुछ वर्गगत हैं । कुछ ऐसे भी पात्र हैं जो स्वतंत्र व्यक्तित्व के वाहक होते हुए भी एक वर्ग विशेष का प्रतिनिधित्व करने लगते हैं। अतः उन्हें भी वर्गगत श्रेणी में ही गिना जा सकता है उदाहरण के रूप में 'पहली मुलाकात', 'दूसरा सफर', 'जगत जहाँ गीता रचना' की गीता, 'ईख' कहानी का दसुई, 'अपने आदमी' के ढ़ाहे काका इनका व्यक्तित्व कहानी में प्रस्फुटित होता है । वर्गगत पात्रों में 'बिना बाप का बच्चा' का रामू 'लौट आती कहानी' दिलबहादुर का उदाहरणार्थ लिये जा सकते हैं। ये पात्र वर्गगत माने जायेंगे क्योंकि वे किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं । यहाँ यादव जी के पात्र निर्माण की विशेषताएँ भी उल्लेखनीय हैं । उनके पात्र निर्माण की विशेषता यह है कि वे किसी कल्पना लोक के निवासी नहीं किन्तु वास्तविक अनुभवों के संसार के पात्र हैं । दूसरे शब्दों में कहें तो हमें अपना ही प्रतिबिम्ब दिखाई देता है क्योंकि वे अपने परिवेश से संयुक्त हैं । उनके पात्र साधारण मानव ही लगते हैं । जिनमें न तो आदर्शों की डीगें हैं न अति यथार्थकता का भ्रमजाल । उनके पात्र तथाकथित बौद्धिकता के भार से दबे हुए नहीं हैं

किन्तु 'चरण-स्पर्श' का घनश्याम और 'गयावर का पेड' अमर का जैसे भावना के संसार में जीने वाले पात्र हैं। यादव जी के अधिकांश पात्र परिस्थितियों से जन्म लेने वाली कुण्ठाओं और ग्रंथियों के शिकार हैं। उनमें संबंधो के बनने का उल्लास कम, संबंधो के टूटने की पीड़ा अधिक है। 'परदेसी की एक रात' झगरू का 'चूहे बने साँप' धीरज का 'आँखे' का चुन्नीलाल 'भैया' का दिव्या जैसे पात्र परिस्थितियों को अनुकूल न कर पाने से मनोग्रंथियों की विकृति का शिकार बने हैं। किन्तु सूर्यदीन यादव की विशेषता यह हैं कि इस प्रकार की विकृतियों का निरुपण साहित्यिक सुरुचि का भंग नहीं करता, एक शिष्टता सर्वत्र दिखाई देती है। फलतः उनके पात्रों के प्रति घृणा नहीं सहानुभूति होती है। यादव जी की कहानियों के संवाद रोचकता, स्वाभाविकता, पात्रानुरुपता व तर्कबद्धता जैसे गुणों से ओत-प्रोत हैं। संवादों का स्वच्छ प्रयोग यादवजी ने किया है। कुछ संवाद कथानक को गति प्रदान करते हैं तो कुछ पात्रो का चारित्रिक उद्घाटन करने में सहायक सिद्ध होते हैं। जैसे 'बदला' कहानी में वकीलों के लोलुप स्वभाव को सामने लाया गया हैं। वकील धाराशास्त्री न बनकर पैसा शास्त्री बनता है तब समाज में अपराधी धन के बल पर निशंक रहता है। यादव जी ने अपनी कहानियों में पात्रों के अनुरूप परिवेश योजना की है। व्यक्ति अपने विशिष्ट परिवेश की उपज होता है जिस परिवेश में वह जीता है उसी के अनुसार उसकी मानसिकता और व्यवहारिकता का विकास होता है। 'झोंपडी का झरोखा' कहानी में करन की मानसिकता स्पष्ट करने के लिए भौतिक वातावरण का निर्माण कुशलता पूर्वक हुआ है। यादव जी की जन्मभूमि ग्रामीण प्रकृति सुंदरी की मुख्य क्रीडास्थली रही है, जिसमें इन्होंने अपना बचपन निर्द्वन्द रूप से बिताया। इनका समस्त ग्रामीण आँचलिक साहित्य प्रकृति की मनमोहक सुंदरता से परिपूर्ण है अतः इनकी कहानियों में इसकी स्पष्ट झलक हमें दिखाई देती हैं। ग्रामीण परिवेश यादव जी का अपना था अपने खून और सांसो में रचा - बसा। एक ऐसा वातावरण जिसे वे जन्म से जानते थे। निश्चित रूप से उसमें उनकी कुछ अपेक्षाएँ भी रही होगी, तो कुछ पूर्वग्रह भी रहे होंगे, उस परिवेश की रचनाओं से उनके पार पाने का एक प्रयास एक आग्रह भी दिखाई देता है। अहमदाबाद की खोली-चाली का परिवेश उन्होंने बहुत बाद में एक रचनात्मक दृष्टि पा लेने के बाद देखा। उसे नजदीक से देखा ही नहीं भोगा भी। उसने उन्हें चौकाया। एक ऐसी दुनिया के दर्शन कराये जहाँ भूख थी, अपमान था, तिरस्कार था। उसे आदमियों का समाज मानने की परिपाटी ही नहीं थी। यहाँ उनका कहानीकार ज्यादा सजग हो गया। उन अछूते प्रसंगो और प्रश्नों को उठाकर एक तरह से वे अपनी कहानियों के माध्यम से उस वर्ग की वकालत करने लगे। उन्होंने लिखा भी हैं - यादवजी की पैनी नज़र 'झोंपडी के झरोखे से' उसके अंदर रहने वालों के हृदय में झांकती है और उनकी लाचारी, पीडा, मनोवेदना देखने का प्रयास सफल होता

है । ये सारे लोग परोक्ष या अपरोक्ष रूप से हमारे देश के देशद्रोही, सत्ता व धन लोलुप लोगों के षडयंत्र का शिकार बने झुपडपट्टी वासी हैं ।

सूर्यदीन यादव जी की कहानियों एवं उपन्यासों का प्रमुख उद्देश्य है विभिन्न मानसिक ग्रंथियों से कुंठित चरित्रों का विश्लेषण करना, सामान्य जन-जीवन का चित्रण करना, नेताओं की सत्ता लोलुपताओं का पर्दाफाश करना, जमीदारों के द्वारा मजदूर वर्ग का शोषण, उनके आंतरिक जगत के रेशे-रेशे को उघाड कर देखना । उनकी कहानियों के कई ऐसे पात्र हैं जो किसी प्रकार के वैयक्तिक पारिवारिक या आर्थिक दबाव तथा सामाजिक विसंगतियों के कारण कुंठित हुए हैं जैसे 'बिना बाप का बच्चा' का नईकी 'पूजा' का रामदास 'अपने आदमी' का ढ़ाहेकाका 'तालाब की मछलियाँ' का तिवारी 'मंदिर-मस्जिद' का शकीना आदि पात्र विभिन्न प्रकार की कुंठाओं से ग्रस्त हैं । उनके कुष्ठाओं से युक्त व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक निरूपण हुआ है । यादव जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, दाम्पत्य जीवन संबंधी तथा सामान्य जन-जीवन विषय के समस्याओं का निरुपण किया है । यादव जी की कहानियों का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण जन-जीवन को अंकन करता है । अन्य कथा साहित्य में सामान्य जन-जीवन को शोषण के प्रतीक के रूप में देखा गया है ? किन्तु यादव जी ने उसे स्वाभाविक मानव के रूप में निरुपित किया है । यहाँ निम्न वर्गीय पात्र के मन की गहराई में जाकर भाव में धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक व पारिवारिक वर्गों की तनावों की निर्मम आलोचना की गई है ।

भाषा की दृष्टि से उनका साहित्य खड़ी बोली में लिखा गया है, किन्तु इसमें तत्सम शब्दों का गांभीर्य, तदभव, देशज, आँचलिक, प्रांतीय, एवं विदेशी शब्दों की स्वाभाविकता, सहजता एवं सरलता है । मुहावरों, लोकोक्तियों और सूक्तियों का सहज उपयोग करने में उनकी कुशलता सराहनीय है । उनकी भाषा सहज प्रतीकों और संकेतो के सहारे सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों एवं विचारों की कलात्मक ढंग से रुपायित करने में समर्थ है । दृश्य बिम्बों के प्रयोग से उसमें चित्रात्मकता आ गई है । उसमें काव्यात्मकता है और आलंकारिक सौंदर्य देखते ही बनता है । उन्होंने अपनी सधी हुई लेखनी एवं मझी हुई भाषा द्वारा साहित्य को नई गति एवं दिशा प्रदान की हैं उनकी भाषा शैली में जो प्रवाह, शक्ति, लचीला, एवं नुकीलापन है, वह कम ही देखने को मिलता है ।

यादवजी की भाषा के सौंदर्य में उपमाओं का प्रयोग बेजोड है, जो रचनाओं के अर्थ में दोहे जैसी गहराई भर देते हैं । उनके पास एक ऐसी समर्थ भाषा है, जो कहीं अटकती नहीं । किसी भी भाव का चित्रण करने में भाषा बहती-सी चली जाती है । यह एक ऐसी भाषा है जिसे उन्होंने जीवन या कहिये अभावों भरे जीवन के खट्टे, मीठे-तिक्त

अनुभवों से सीधे-सीधे कमाया है । इसलिए ऐसा कही नहीं लगता है कि जो वह कहना चाहते है, वह नहीं कह पाये । बल्कि अक्सर वह हमारे समक्ष बहुत थोड़े ही शब्दों में पूरा दृश्य उपस्थित कर देते हैं । शैली सी दृष्टि से यादवजी ने मुख्यतः वर्णात्मक शैली अपनाई है । प्रभावपूर्ण वर्णन किसी भी साहित्यकार की सफलता की कसौटी होता है। उनके कथा साहित्य में वर्णन-कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण देखने को मिलता है । आवश्यकता अनुसार इस शैली में विश्लेषणात्मक, रिपोर्ताज एवं कमेंट्री का पुट दिया है । जहाँ भावुकता की प्रधानता है वहाँ शैली संस्मरण के निकट चली गई है । कहीं-कहीं आत्मकथात्मक कथन पद्धति से पाठकों से सहज आत्मीयता स्थापित की है । नये शैली रूपों में, पात्रों में पात्रात्मक, पूर्व दीप्ति चेतना प्रवाह, एवं मनोविश्लेषणात्मक चित्रात्मक आदि शैलियों का सफल निर्वाह किया है बात को प्रवाही बनाने एवं उसके व्यंजना लाने के लिए व्यंग्यात्मक शैली का स्पर्श किया है । कहानी-कथन व गीत-शैली का प्रयोग करके उन्होंने अपनी प्रयोग धार्मिकता सिद्ध की है । उनकी शैली को किसी एक ढाँचे में बाँधकर रखना कठिन है। वास्तव में उन्होंने मिली-जुली संश्लिष्ट शैली का प्रयोग किया है ।

जीवन के विभिन्न आयामों को न केवल छूआ है बल्कि उनका रेशा-रेशा उधेडती-बुनती यादवजी की कहानियों का कथ्य, वास्तव में विशिष्ट है । कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि यादव जी की कहानियों में आम-आदमी के सधे संतुलित और सर्वांगीण विवरण की प्रस्तुति का प्रयत्न है । इस चित्रण में अतिरेक को बाँधते हुए यथार्थ का स्पर्श है पर साथ ही मानवीय मूल्यों की गरिमा को उजागर करने की ईमानदारी से कोशिश की गई है । इसीलिए इनकी कहानियों का अध्ययन पाठकों को ग्रामीण मन को समझने का मौका देता है और समाज में निम्न वर्गीय जन-जीवन के सही स्थान और सम्मान की भूमिका तैयार करता है ।

सूर्यदीन यादव ने मध्यमवर्गीय जीवन को नजदीक से देखा परखा है । इनकी कहानियों में व्यक्ति अर्थाभाव के कारण जीवन से संघर्ष व जूझता दिखाई देता है । अर्थ के लिए मारा-मारी के कारण हिंसा, आतंक, असुरक्षा और अराजकता बढ़ रही है । अर्थाभाव के कारण व्यक्ति आदर्शहीन, विवेकहीन और दिशाहीन होता जा रहा है । इनकी कहानियों में अर्थाभाव के कारण मानव को छटपटाते हुए दिखाया गया है । आर्थिक परिस्थितियों की जटिलता के कारण उसमें कुंठा, अकेलापन और घुटन पैदा होना स्वाभाविक है । पारिवारिक रिश्तों की नींव भी आर्थिक सम्पन्नता पर टिकी हुई है । जिस परिवार में आर्थिक अभाव की स्थिति पैदा होती है आपसी संबंध टूटने व बिखरने लगते है । मध्यमवर्गीय व्यक्ति प्रतिद्वन्दिता के कारण अनेक व्यंग्य, लांछन, उपहास, उपेक्षाएँ, सहन करने को मजबूर दिखाई

देता हैं । इनकी कहानियों में मध्यमवर्ग जिंदगी से जूझता दिखाई देता है । उसे 'फाटक खुलने के इंतजार' में 'तमाशा', 'कम्प्यूटर की लड़की' व 'भीड़' आदि कहानियों में हम देख सकते हैं ।

इतना ही नहीं नारी के प्रति, उसकी समस्याओं, पीड़ाओं और आशा-आकांक्षाओं के भीतर-बाहर के संसार के प्रति यादवजी की विशेष सहानुभूति है, सच्चा 'कन्सर्न' है। सदियों की विविध समस्याओं को उन्होंने बखूबी प्रस्तुत किया है परन्तु उनकी लेखनी दाम्पत्य जीवन की छोटी-बड़ी समस्याओं में सबसे अधिक रमी है । आधुनिक युग में नारी की मानसिकता में आये बृहद परिवर्तनों की वजह से दाम्पत्य-संबंधो में तनाव-खिंचाव आया है । आज पुरुषो की दृष्टि में परिवर्तन हुआ है । किन्तु अभी भी वह नारी विषयक पूर्वग्रहो से मुक्त नहीं हुआ है । अत: वह नारी पर एकाधिकार व आधिपत्य चाहता है पर नारी के संतोष, सुख, आशा-आकांक्षाओं की क्रूर उपेक्षा करता है । फलस्वरूप वैवाहिक संबंधो मे असंतुलन उत्पन्न होता है । सकुनि विवाह के बाद पराये पुरुष के साथ शारीरिक संबंध स्थापित करने के पश्चात आत्मग्लानि का अनुभव करती है अपितु पति को इस बात की जानकारी देती है और पुरुष के अहम को चोट पहुँचाती है । 'बिना बाप का बच्चा' कहानी की पात्रा नईकी सामाजिक बंधनों से पीडित है । क्योंकि उसका पति मर जाने के कारण वह विधवा होकर दूसरा विवाह नहीं कर सकती है । इतना ही नहीं इन कहानियों में यादवजी ने घर में, समाज में नारी की विविध भूमिकाओं और रूपों को दिखाकर उस पर टिप्पणी करते हुए दिखाई देते हैं । यहाँ भी नारी को प्रेमिका और पत्नी रूप के चित्रण में साहस के साथ इन रूपों में आये हुए बदलावों को चित्रित किया है । 'जगत जहाँ गीता रचना' के पात्र एक दूसरे से प्रेम करते हैं और उसके माध्यम से आधुनिक जनवादी बहुमुखी प्रेमसंबंधों का आलेखन हुआ है । यादवजी की कहानियों में एक ओर लकीर का फकीर बनकर पुरातन आदर्शों का पालन करने वाले पात्र हैं तो दूसरी ओर आधुनिक पढ़े-लिखे पात्र हैं जो इसका विरोध करते हैं । पत्नी व प्रेमिका रूप में यादव जी के नारी पात्र पुरुष के सबल आश्रय का विरोध नहीं करते किन्तु उनका व्यक्तित्व पुरुष का आश्रयी नही हैं उनके विकास का अपना एक अलग पथ ही है ।

आज भी भ्रष्ट व्यवस्था, शासन प्रणाली से होती कार्यवाही, रिश्वत, विधायकों की भीड़, स्वार्थी, राजनैतिज्ञ, राजनैतिक दाव-पैंच, धोखेबाजी, कालाबाजारी इत्यादि असंगतियों को अपनी कहानियों के माध्यम से यादव जी हमारे सामने खोलकर रख देते हैं । भ्रष्ट व्यवस्था आज गोरखधंधा बन गया है । हमारे देश को खोखला करने में महत्वपूर्ण भूमिका

अदा कर रहा है । अत: भ्रष्ट व्यवस्था की सरकारी कार्यप्रणालियों को हम 'तालाब की मछलियां', 'तमाशा', 'झोंपडी के झरोखे', से 'ठनगन' इत्यादि कहानियों में देख सकते हैं।

आज जहाँ हम विज्ञान की उपलब्धियों और आधुनिकता के नये बौद्धिक आयामों को प्राप्त कर संसार के नक्शे पर मित्रता और सह अस्तित्व की ओर बढ़ रहे हैं वही अपने ही समाज, परिवार और परिवेश में एक दूसरे के प्रति अधिक औपचारिक होते गये हैं । दो पीढ़ियों के बीच भी अब वह आत्मीय एवं अनौपचारिक संबंध नहीं रहा जो इसी शताब्दी की शुरुआत में सहज सुलभ था । समय के परिवर्तन के साथ नयी और पुरानी पीढी के बीच बढती गई दूरी में परस्पर संवाद की स्थिति भी नहीं रह गयी है। एक पीढ़ी अपनी बात दूसरी पीढ़ी को समझाने में बेअसर साबित हो रही है । दो पीढ़ियों के बीच का अंतर वैचारिक दृष्टि का भी हैं और मूल्यगत मान्यताओं के अस्वीकार का भी । मन मे आक्रोश, विरोध और असमंजस्य का भाव होने पर भी नई पीढी अपने स्वतंत्र नये मान्य मूल्य अभी तक नहीं बना सका । इसलिए इसकी चेतना में एक अनिश्चय का घाव है । यादवजी की कहानियों में नई पुरानी पीढ़ी का संघर्ष नजर आता है 'फर्ज' 'अधूरी डायरी' 'काफी कुछ' 'पलभर का सफर' आदि कहानी में हम पीढ़ियों के बीच का संघर्ष, अंतर व मनमुटाव देख सकते हैं ।

प्रेम का स्थायित्व विवाह में भी प्राप्त होता है । किन्तु सामाजिक, पारिवारिक या आर्थिक दबाव अथवा अन्य ऐसी अनेक स्थितियाँ बीच में आ जाती हैं, जिससे प्रेम को आगे बढने का अवसर नहीं मिल पाता । बेकारी, बेरोजगारी परस्पर, अविश्वास, अहं वैचारिक साम्य का अभाव तथा नारी के बढते अविश्वास आदि बहुत से कारण हैं जिसमें प्रेम संबंध जटिल हो गये हैं । उसे 'आँखे', 'बिना बाप का बच्चा', 'गयावर का पेड' आदि कहानियों में हम देख सकते हैं । मानवीय संबंधों की इस खटाश और टूटन को यादवजी ने बखूबी उभारा है ।

फिर भी यादवजी की यह खासियत थी कि उनके यहाँ छोटे से छोटा मैला-कुचैला लगनेवाला पात्र भी इंसान और इन्सानियत की पूरी गरिमा के साथ मौजूद है । वहाँ सताए हुए पात्र तो हैं, मगर यादवजी के पात्र हार नहीं मानते । उनमें प्रतिरोध शक्ति तथा जीवट है और वे डटकर जीवन की स्थितियों का मुकाबला करते हैं । शायद ही हिन्दी का कोई दूसरा लेखक हो, जिसने गरीब और ग्रामीण निचले वर्ग के लोगों को इतना आदर और गरिमा दी हो जितना यादव जी ने । यादवजी मानो मैले से मैले आदमी के हृदय में छिपी उज्जवला दिखाते हैं तो वहीं यादवजी की लेखनी में इतनी ताकत आ जाती है कि लगता

है कि यह आदर्श छूछा आदर्श नहीं है । निम्न वर्गीय ग्रामीणो पर 'ठनगन', 'झोंपडी का झरोखा', 'वह रात', 'ऊसर जमीन' जैसी जीवंत और मार्मिक कहानियाँ यादव जी ने लिखी हैं।

समीक्षा ग्रन्थ – 'आँचलिक कथा – सर्जक सूर्यदीन यादव' के आवरण पृष्ठ पर प्रकाशक लिखते हैं कि – डॉ. सूर्यदीन यादव बहुमुखी प्रतिमा के रचनाकार माने जाते हैं, वे कविता, कहानी, उपन्यास एवं समीक्षा क्षेत्र में चर्चास्पद रहे हैं । उनकी कई पुस्तकें पुरस्कृत भी हुई हैं। उनके लेखन साहित्य की सबसे बडी विशेषता एवं शक्ति उनकी आँचलिकता एवं गाँव परिवेश का जीवंत यर्थाथ है ।

सूर्यदीनजी का कथा साहित्य जनसामान्य मानव के नियति एवं जीवन–जगत का पडताल करता है । उनका सम्पूर्ण कथा–साहित्य जीवन–जगत का यथार्थ है, उससे अलग हटकर कुछ भी नहीं है । उनका कथा साहित्य विवशता की उपज है, मानवीय मूल्यों की आतुरतापूर्ण तलाश है । अनुभूत सत्य है । उनका कथा साहित्य जीवन की विसंगातियों का नया आयाम देता हुआ दस्तावेज है, अवमूल्यित होते समाज में मूल्यों को तलाशती रोशनी है । उनका कथा साहित्य भौतिक एवं उपभोक्तावादी संस्कृति में मानव संबंधो की संविद मनोदशा का दर्पण है। कथ्य की दृष्टि से उनके कथा साहित्य का महत्त्वपूर्ण पक्ष है अनुभूति की सघनता। अनुभूतियाँ इतनी गहरी हैं कि छोटे–छोटे अतिखंडित सामाजिक यथार्थपरक विषय प्रसंग भी पाठक के अन्तस्थल में गहरे बैठकर रागात्मकता एवं विद्रोहात्मकता का सृजन करती हैं ।

यादवजी के कथा साहित्य का महत्वपूर्ण पक्ष है शिल्प की नवीनता एवं प्रयोगशीलता। नूतन औपन्यासिक शिल्प के कारण वे विशेष चर्चित रहे । 'माँ का आँचल' आँचलिक उपन्यास होने के कारण उपन्यास साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है । 'ममता' उपन्यास भी कथ्य एवं शैली का अभिनव प्रयोगशीलता से संवलित है । यादव जी की यथार्थ दृष्टि की गहरी पैठ इस उपन्यास में विशेष रूप से उभरकर सामने आया है इस यथार्थवादी उपन्यास की सांकेतिकता अद्भूत है ।

यादव जी की लगभग ४० कहानियाँ हैं जिसमें कुछ बाल कहानियाँ भी हैं। उपन्यासों की भाँति प्राय: सभी कहानियाँ सामाजिक यथार्थके धरातल पर रची गयी हैं। उनकी कहानियों में मोहभंग, ऊब, कुंठा, अन्तर्द्वन्द तथा रोजमर्रा की जिंदगी की विसंगतियाँ अकेलोपन की पीडा मिलती है । यादव जी की कहानियाँ या तो वातावरण से प्रारंभ होती हैं या संवाद से । प्रकृति–चित्रण तथा मनोभावों की अभिव्यक्ति में वे संवेदना के परत–दर–परत खोलते हैं। कविता की तरह रागात्मक्ता का संचार करते हैं । संवादों में निहित व्यंग्यार्थ अद्भुद हैं । यादवजी की कुछ कहानियाँ चरित्र प्रधान हैं । जिसमें संस्मरणात्मक वैशिष्ट्य विद्यमान है।

कुछ कहानियों की विषयवस्तु एवं प्रस्तुति इस प्रकार की है कि उन्हें ललित निबंधो की कोटि में रखा जा सकता है । बाल कहानियाँ शिक्षाप्रद एवं प्रेरक हैं । निष्कर्षत: यादवजी का कथा साहित्य वस्तु एवं शिल्प की दृष्टि से अपनी अभिनव प्रयोगशीलता, सांकेतिक्ता, प्रतीकात्मक्ता, व्यंग्यात्मकता तथा काव्यात्मक्ता के कारण हिन्दी साहित्य की निधि तो नहीं कह सकतें हैं किंतु महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । गुजरात के कथा साहित्य में यादव जी का योगदान अप्रतिम है ।

यादवजी के उपन्यास एवं कहानी की भाषा-शैली विविधता और नवीनता से युक्त है। उपन्यास एवं कहानी में प्रयुक्त की गई शैलीगत प्रयोगशीलता हिन्दी गद्य शैली को एक नई दिशा देने में सहायक है। उनकी गद्यशैली की प्रतीकात्मक्ता, व्यंग्यात्मकता तथा काव्यात्मक्ता निश्चित तौर से हिन्दी साहित्य में अनूठी विशेषता लिए हुए है । भाषा में तत्सम, तदभव, देशज, अंग्रेजी के शब्द चयन में सदाशयता का परिचय दिया है । भाषा में तुकाश्रित एवं पुनरावृत्तिमूलक शब्द, मुहावरे आदि का सुंदर प्रयोग हुआ है । भाषा में चित्रात्मक्ता, ध्वन्यात्मक्ता, प्रवाहमयता, आलंकारिता आदि के गुण विद्यमान हैं ।

इस प्रकार कह सकते हैं कि यादव जी ने सम्पूर्ण गद्य-साहित्य में प्रयोगशीलता तथा प्रगतिशीलता का परिचय दिया है । उन्होंने हर क्षेत्र में अपनी रचनात्मक्ता के प्रमाण दिए हैं । उन्होंने जिस विद्या को अपनाया, वह विद्या अपने सामाजिक दायित्व को पूरा करती है । क्योंकि उनकी रचना-दृष्टि यथार्थ एवं मूल्यपरक है । गद्य रचनाओं के माध्यम से यादवजी अपने समय और समाज के सत्यों तक पहुँचने तथा उन्हें अभिव्यक्त करने के लिए निरंतर सार्थक्ता के साथ सन्नद्ध रहे । वे जीवन के बुनियादी समस्याओं और मूल सरोकारों से जुडने की प्रक्रिया में प्रतीकात्मक, व्यंग्यात्मक तथा काव्यात्मक भाव भूमि से अलग नहीं होते । उनकी प्रतीकात्मता तथा सांकेतिकता यथार्थ की भूमि पर पाँव टिकाए रहती है । उनकी गद्यशैली अद्‌भुत है । वे केवल गद्य की एक विधा शैली में ही बँधकर नहीं रहते अपितु एक विधा की शैली दूसरी विधा की शैली में कमोवेश अतिक्रमण करती रहती है । इसी प्रवृत्ति के कारण काव्य और उपन्यास, कहानी रचनाओं में कोई अंतर नहीं रह जाता है । यथार्थ परकता, प्रयोगशीलता, व्यंग्यात्मक्ता एवं काव्यात्मक्ता के कारण सूर्यदीन यादव जी अपने समकालीन रचनाकारों में अलग पहचान बनाते हैं । उनमें किसी के अनुकरण की प्रवृत्ति नहीं है बल्कि अपनी जमीन तलाशते ही नहीं निर्मित करते हैं। इसीलिए वे अपने समकालीन रचनाकारों से संवेदना एवं संप्रेषण के धरातल पर अप्रतिम हैं।

तो वहीं पर माया प्रकाश पाण्डेजी यादव जी के बारे में लिखते हैं कि यादव जी अनुभूतिजन्य चेतनावादी लेखक होने के नाते अपने आस-पास के जीवंत परिवेश से मसाले चुनते हैं ।

डॉ. दिवाकर गौड डॉ. सूर्यदीन के बारे में लिखते हैं कि – सूर्यदीन यादव गुजरात में कार्यरत हिन्दी साहित्य के एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं जिनकी प्रतिभा एक साथ अनेक विधाओं में दिखाई पडती है । वे जहाँ एक ओर कहानी के क्षेत्र में साहित्यिक गगन विहार करते हैं, वहीं दूसरी और उपन्यास के माध्यम से भी साहित्यिक क्षेत्र में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते हैं । उपन्यास जैसे रसीले साहित्यिक क्षेत्र से उन्होंने अपेक्षाकृत उबाऊ माने जाने वाले समीक्षा के क्षेत्र में भी पर्दापण किया है वे इस क्षेत्र के भी एक सबल हस्ताक्षर बन कर उभरे हैं ।

समग्रतः डॉ. यादव जी हिन्दी उपन्यास साहित्य में पारंपरिक ढाँचे को तोडकर भौतिक और नूतन ढाँचे के शुरूआती कथाकार के रूप में याद किये जायेंगे । आपने अपने 'एक सफर का मुसाफिर' उपन्यास को 'मनान्तरित' कहकर हिन्दी उपन्यासों की परम्परा में एक नई धारा का प्रवर्तन स्वयं किया है । डॉ. यादव जी जन्मजात विद्रोही स्वभाव के साहित्यकार रहे हैं । वे कभी किसी दायरे में नहीं बँधे । उन्होंने उपन्यास, कहानी, संस्मरण, समीक्षा आदि सभी में प्रचलित परिपाटी को तोडा है । नये प्रयोग किये हैं । एक ईमानदार लेखक के रूप में उनकी रचना 'एक सफर के मुसाफिर' मूल्यवान, प्रशंसनीय है और साहित्य की धरोहर है ।

सारांशतः हम कह सकते हैं कि डॉ. सूर्यदीन यादव का कथा वैशिष्टय उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की साझेदारी से सृजित एक प्रकृतिस्थ गाँव परिवेशीय जन सामान्य के जीवन का अनुभव प्रधान यथार्थ दस्तावेज है, जो किसी एक विशिष्ट गाँव परिवेश को ही नहीं, कहानियों, उपन्यासो के माध्यम से अपनी विशिष्ट कला-शैली द्वारा भारतीय गाँव समाज को जीवंत करने में हु-ब-हु सफल रहा है । सूर्यदीन यादव के समग्र कथा साहित्य को समझने और उसका विश्लेषण करने का मेरा यह प्रथम विनम्र प्रयास है । कथ्य की पुष्टि के लिए मैंनें आधारग्रन्थों एवं सहायक ग्रन्थो का नामोल्लेख करके शोधकार्य को प्रामाणिक बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया है ।

• • •

परिशिष्ट

(अ) आधार - ग्रंथ :

कहानी संकलन

(१) चित्रित नवीन कहानियाँ १९६९ प्रकाशक - छात्र प्रकाशन
२१०. साहित्य भवन, गंगाराम पुर, राजापुर, सुल्तानपुर (यु.पी.)

(२) पहली यात्रा १९९१ प्रकाशक बाबूभाई एच. शाह
संस्कृति प्रकाशन निशापोल झवेरीरोड, रिलीफ रोड, अहमदाबाद.

(३) वह रात १९९८
प्रकाशक : शांति पुस्तक मंदिर ७१, ब्लोक K लाल क्वार्टर, कृष्णनगर दिल्ली.

(४) दूसरा सफर २००५
प्रकाशक मित्तल एन्ड संस दिल्ली - ११००९२

उपन्यास

(१) दूसरा आँचल १९९१ (गुजराती में २००९)
विद्यार्थी प्रकाशन K-71 कृष्णनगर - दिल्ली ११००५१

(२) माँ का आँचल - १९९२
शांति पुस्तक मंदिर ७१, ब्लोक K लाल क्वार्टर, कृष्णनगर दिल्ली-५१.

(३) ममता २००२
प्रकाशक भावना प्रकाशन १२६, पटपडगंज, दिल्ली - ९१

(४) अँधेरा जहाँ उजाला २००३
भावना प्रकान १०९-A पटपडगंज दिल्ली - ११००९१.

(५) चौराहे के लोग २००४
पश्चिमांचल प्रकाशन २८, मनसुखनगर सोसा. भावसार होस्टेल, वाडज, अहमदाबाद.

(६) प्रेमश्रोत २००५ (गुजराती में - २००८)

छात्र प्रकाशन १० साहित्य भवन गंगापुर, राजापुर, सुल्तानपुर (यु.पी.)

(७) जमीन २००६

सरिता प्रकाशन ३, पुनित कोलोनी पवनचक्की रोड, नडियाद, गुजरात.

(८) एक सफर के मुसाफिर २००९

प्रकाशक नीरज बुक सेंटर c/o भावना प्रकाशन पटपडगंज, दिल्ली.

८-३२ आर्यानगर सोसायटी दिल्ली - ९२

(ब) संदर्भ ग्रंथ :

(१) आँचलिक कथा सर्जक सूर्यदीन यादव श्रीमती कांति अय्यर

छात्र प्रकाशन रा., साहित्य भवन, पुरेगंगाराम पुर, राजूपुर, सुल्तानपुर (यु.पी)

(२) आधुनिक हिन्दी साहित्य और अनुसंधान - डॉ. राजुरकर / डॉ. राजकमल बोल

(३) उछलती हुई लहरें डॉ. सूर्यदीन यादव

छात्र प्रकाशन - रा. पूरेगंगापुर, राजापुर, सुल्तानपुर (यू.पी.)

(४) काव्य के रूप संपादक डॉ. गुलाब राय

(५) कहानी पथ भूमिका संपादक महेन्द्र प्रताप

(६) कहानी नई कहानी डॉ. नामवर सिंह

(७) कहानी के नये सीमान्त रत्नलाल शर्मा

(८) कथाकार सूर्यदीन यादव डॉ. दयाशंकर त्रिपाठी / डॉ. माया प्रकाश पाण्डे

दर्पण प्रकाशन ७, शंकर पार्क, नडियाद.

(९) गुजरात का समकालीन हिन्दी साहित्य सं. डॉ. अम्बाशंकर नागर / डॉ. रामकुमार गुप्त / डॉ. काबरा

प्र. हिन्दी साहित्य परिषद २, अमरलोक एपार्ट, बालवाटिका, मणिनगर, अहमदाबाद.

(१०) जहाँ देने की अपेक्षा पाया डॉ. सूर्यदीन यादव

सरिता प्रकाशन ३, पुनित कोलोनी, पवन चक्की रोड, नडियाद, गुजरात.

(११) जयशंकर प्रसाद की कहानियों में शिल्प-विधान अशोक गुप्ता

(१२) नई कहानी की भूमिका - कमलेश्वर

(१३) प्रारम्भिक रचना और प्रेरक व्यक्तित्व डॉ. सूर्यदीन यादव
सरिता प्रकाशन ३, पुनित कोलोनी, पवन चक्की रोड, नडियाद, गुजरात.

(१४) प्रेरणा डॉ. सूर्यदीन यादव
प्रकाशक छात्र प्रकाशन १०, साहित्य भवन, पूरेगंगाराम पुर, जि. सुल्तानपुर (यु.पी.)

(१५) बृहद हिन्दी कोश

(१६) रोजमर्रा की जिन्दगी बनाम आज की कविता डॉ. सूर्यदीन यादव
पंकज बुक्स, दिल्ली - ११००९१

(१७) लोकजीवन के कवि सूर्यदीन यादव सं. ईश्वर सिंह चौहान / अरुणकुमार आर्य
पार्श्व पब्लिकेशन निशापोल, झवेरीवाड, रिलीफ रोड, अहमदाबाद.

(१८) साहित्यिक निबंध संपादक डॉ. शांति स्वरूप गुप्त

(१९) साठोत्तरी हिन्दी कहानी के. एन. मालती

(२०) सक्रिय कहानी की भूमिका राकेश वत्स

(२१) सुदर्शन मजीठिया का औपन्यासिक शिल्प डॉ. सूर्यदीन यादव
भावना प्रकाशन १२६, पटपडगंज दिल्ली - ११००९१

(२२) साहित्यिक निबंध राजनाथ शर्मा

(२३) हिन्दी उपन्यास शिल्प बदलते परिवेश डॉ. प्रेम भटनागर

(२४) हिन्दी कहानी का विकास डॉ. देवेश ठाकुर

(२५) हिन्दी कहानी एक अन्तर्यात्रा डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ

(२६) हिन्दी कहानी का समाजशास्त्रीय अध्ययन डॉ. महेशचंद्र दिवाकर

(२७) हिन्दी कहानी दो दशक की यात्रा सूर्यकांत दीक्षित

(२८) हिन्दी कहानी के आन्दोलन, उपलब्धियाँ और सीमाएँ - डॉ. रजनीश कुमार

(२९) हिन्दी साहित्य - युग और प्रवृत्तियाँ डॉ. सुरेन्द्र सिंह

(३०) हिन्दी कहानी का विकास - डॉ. देवेश

पत्र - पत्रिकाएँ

(१) दस्तावेज सम्पादक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
अंक अप्रैल - जून २०००
बेहियाहाता, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश.

(२) सृजन मूल्यांकन सम्पादक स्वामीशरण
३/१५४ एच, मयुर विहार, फेज-३
दिल्ली - ११००९६

(३) साहित्य परिवार सं. डॉ. सूर्यदीन यादव
अंक - ७ अप्रेल सन् २००९ एवं
३, पुनितनगर, पवन चक्की रोड, नडियाद, अहमदाबाद.

(४) रैन बसेरा सं. जयसिंह व्यथित
अंक
नीलकंठ सोसायटी, तक्षशिला स्कूल के पास, ओढ़व, अहमदाबाद.

(५) रचनाकर्म संपादक डॉ. माया प्रकाश पाण्डेय
साईधाम सोसायटी, विद्यानगर, आणंद.

डॉ. सूर्यदीन यादव का समग्र रचना संसार

क्रम	कृति का नाम	प्रकाशक वर्ष	पृष्ठ संख्या
	कहानी संग्रह		
(१)	चित्रित नवीन कहानियाँ	१९६९	८०
(२)	पहली यात्रा	१९९१	१२८
(३)	वह रात	१९९८	९५

(४)	दूसरा सफर	२००५	११९
	उपन्यास		
(१)	दूसरा आँचल	१९९१	१२४
(२)	माँ का आँचल	१९९२	
(३)	ममता	२००२	१४४
(४)	अँधेरा जहाँ उजाला	२००३	२३९
(५)	चौराहे के लोग	२००४	९५
(६)	प्रेमश्रोत	२००५	११२
(७)	जमीन	२००६	१४४
(८)	एक सफर के मुसाफिर	२००८	२६३
	समीक्षा		
(१)	कथाकार रामदश मिश्र (शोध प्रबंध)	१९८७	
(२)	सुदर्शन मजीठिया का औपन्यासिक शिल्प	१९९९	१४१
(३)	रामदरश मिश्र की कविता सृजन के रंग	२००५	
(४)	रोजमर्रा की जिंदगी व नाम आज की कविता	२००६	१४२
	निबंध		
(१)	प्रारंभिक रचना और प्रेरक व्यक्तित्व	२०००	९५
(२)	जहाँ देने की अपेक्षा पाया	२००७	९७
	कविता संग्रह		
(१)	हिन्दी वाहिनी	१९७७	
(२)	फागुन बीते जा रहे	१९९३	
(३)	दूसरी आँख	१९९४	
(४)	लगे मेरा गाँव	२००१	

(५) बूँद २००४

(६) ऊछलती हुई लहरें २००५

(७) प्रेरणा २००६

(८) हम खून लाल रंग के २००८

पत्रिकाएँ

साहित्य-परिवार

प्रथम अंक,

सप्तम अंक

रचनाकर्म

राष्ट्रवीणा

भाषासेतु

कथाबिंब

सम्बोधन

हंस

दहलीज

अयोध्यासम्वाद

काव्यकुन्जसंवाद

अभिनव प्रसंग वंश

लोकयज्ञ

• • •